वर्ष 26 वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई-पत्रिका अंक 4

वेदान्त पीयूष

अप्रैल 2026

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

अप्रैल २०२६

वेदान्त आश्रम,
ई - 2948, सुदामा नगर
इन्दौर - 452009
Web: https://www.vmission.org.in
email : vashram.in@gmail.com

विषय सूचि

०२	प्रकाशक
०५	श्लोक
०६	सन्देश
१६	वाक्यवृत्ति
२१	गीता और मानवजीवन
२८	जीवन्मुक्त
३४	कैकेयी चरित्र
३९	कथा – सुदामा की निष्काम भक्ति
४३	आश्रम एवं मिशन गतिविधियां
५६	कार्यक्रम
५९	इन्टरनेट
६०	लिन्क

आत्मबोध – श्लोक ५६

तिर्यगूर्ध्वमधः पूर्णं सच्चिदानन्दमद्वयम्।
अनन्तं नित्यमेकं यत् तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्।।

जो उपर भी है, नीचे भी है, जो सच्चिदानन्द, अद्वय अनन्त स्वरूप नित्य, एक मात्र पूर्णतत्त्व है, उसे तुम ब्रह्म जानों।

सन्देश

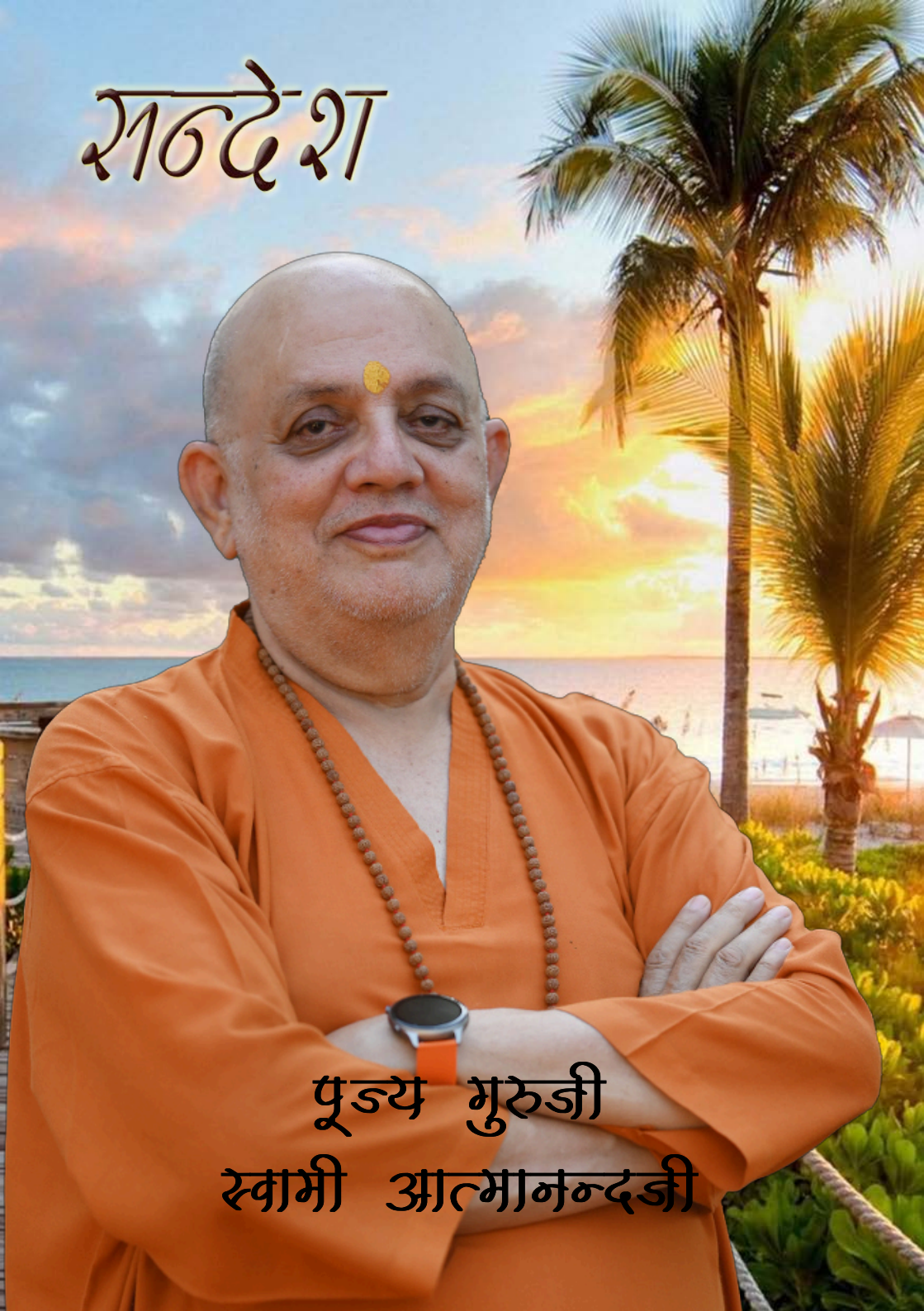

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

ईश्वरार्पण का आशय

जीव सीमित कर्ता है –

हम सभी व्यक्तिगत अस्तित्ववाले जीवित प्राणी है। जिन्हें जीवनका आशीर्वाद मिला है। इस जीवनरूपी झोलीमें अनेक प्रकारके वरदान है। हमारे पास कई विकल्प होते है, हम कुछ कर सकते है या न करनेका निर्णय भी ले सकते हैं। परन्तु एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसे हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या हम पूर्णतः स्वतंत्र है या हमारी स्वतंत्रता सीमित है।

निश्चितरूपसे हमारे पास पशुओं की तुलना में कुछ स्वतंत्रता है सोचनेकी, स्वप्न देखने की, कार्य करने की, उठने या अधिक समय तक सोने की, बोलने या मौन रहने की। पशु अधिकतर निश्चित ढंग से कार्य करने के लिए प्रोग्रेम्ड होते है। मनुष्य के पास उसकी अपेक्षा कहीं अधिक स्वतंत्रता है। फिर भी विनम्रता से हमें स्वीकार करना चाहिए कि जीवन की अनेक महत्वपूर्ण बातें हमारी इच्छा के अनुसार नहीं हुई, जैसे हम किस परिवार में या देश में जन्म लें, हमारा शरीर कैसा हो आदि। ये सब हमें बिना पूछे ही प्राप्त हो गए है। जीवन में आनेवाली परिस्थितियां भी हमारे नियंत्रण में नहीं होती। इसे हम भाग्य या ईश्वर की इच्छा कह सकते हैं, अर्थात् यह सब दैविक व्यवस्था के अन्तर्गत है।

फिर भी यह समझना उतना ही आवश्यक है कि इन परिस्थितियों में हमारी प्रतिक्रिया देने की स्वतंत्रता अवश्य है। जो लोग यह समझ लेते हैं कि किन बातों को स्वीकार करना चाहिए और किन्हें बदलना चाहिए। वही वास्तव में बुद्धिमान होते है।

कर्मफल सदैव ईश्वरेच्छा है–

हमारी स्वतंत्रता मुख्यतः हमारी प्रतिक्रिया में निहित है। कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही गणनशील क्यों न हो! यह नहीं जान सकता कि अगली परिस्थिति क्या होगी? हर परिस्थिति नई और अप्रत्याशित होती है। इसलिए हमें अपना समय और उर्जा बचाते हुए जो भी परिस्थिति आएं उसे स्वीकार करना चाहिए और उसमें सर्वोत्तम एवं बुद्धिमत्तापूर्ण प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

यह भी समझना आवश्यक है कि कर्म का फल भी पूर्णतः हमारे हाथ में नहीं होता। किसी परिणाम के आने में अनेक बाहरी शक्तियां कार्य करती है। उदाहरण के लिए एक किसान बीज बो सकता है, किन्तु मौसम उसके नियंत्रण में नहीं है और मौसम तो उनमें से केवल एक ही कारक है। ऐसे सैंकडों कारक हो सकते है।

इसलिए बुद्धिमत्ता इसीमें है कि हम अपने कर्तव्यों को पूर्णरूप से निभाने के बाद जो भी परिणाम आएं, उसे ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार करें। सफलता या असफलता का पूरा श्रेय स्वयं को देना अज्ञान व मोह है। फिर भी हमें अपनी प्रतिक्रियाओं को सुधारते रहने का प्रयास करना चाहिए।

अहंकार अल्पदृष्टि है–

यदि आपको अपने प्रयासों में सफलता मिलती है, तो प्रसन्न होना स्वाभाविक है कि आपने अपना कर्तव्य ठीक से निभाया। लेकिन सफलता का पूरा श्रेय केवल स्वयं को देना उचित नहीं है। इसमें अपने साथियों, शिक्षकों, मार्गनिर्देशकों और सहयोगियों का भी योगदान होता है। यह एक सामूहिक प्रयास होता है।

जो व्यक्ति दूसरों को श्रेय नहीं देता, वह धीरे–धीरे अकेला पड़ जाता है उसमें अनावश्यक अहंकार आ जाता है और वह स्वकेन्द्रित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति जीवनपर्यन्त की अगली चुनौतियों के प्रति खुले मन का नहीं रह पाता। इसी प्रकार असफलता का पूरा दोष स्वयं पर नहीं लेना चाहिए। यह एक सामूहिक या प्रणालीगत असफलता है, जिसमें आप केवल एक घटक है। आत्म निरीक्षण

आवश्यक है। जिससे कि हम आगे बेहतर कार्य कर सकें। किन्तु यह समझना भी जरूरी है कि परिणाम अनेक कारकों पर निर्भर करता है।

कर्मफल ईश्वर से प्राप्त होता है–

यदि प्रत्येक परिस्थिति अनेक शक्तियों, प्रकृति की शक्तियों, आपकी बुद्धि और उत्साह से प्रभावित होती है, तो अन्ततः इन सबका संचालन करनेवाला एक ही ईश्वर शक्तिमान है। वही अंतिम रूप से परिणाम देता है।

जब यह समझ विकसित होती है, तब हर कर्म ईश्वर के साथ एक खेल जैसा बन जाता है। वही हमें अवसर देता है। वही हमें शक्ति देता है और वही परिणम भी प्रदान करता है। इस

दृष्टिकोण से जीवन आनंदमय बन जाता है। हम सदा अपने प्रिय ईश्वर के साथ होते हैं।

अर्पणबुद्धि का प्रभाव–

ईश्वर–अर्पण बुद्धि का अर्थ है कि जीवन एक जीवन्त संवाद बन जाता है। हम कर्म करते हुए भी कर्मों के बोझ से मुक्त रहते हैं। हमारे भीतर चिंता और तनाव नहीं रहता। क्योंकि हम स्वयं को सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरण में अनुभव करते हैं।

ऐसा मन अहंकार और चिंता से मुक्त होकर शान्त और शुद्ध हो जाता है। यही वह मन है जिसे भगवद्गीता में शुद्ध मन कहा गया है। इसके लिए किसी गुफा में जाकर साधना करनेकी आवश्यकता नहीं। हमारा कार्यक्षेत्र ही साधना का स्थान बन सकता है। अपने सभी कर्म अच्छे और बुरे

ईश्वर को अर्पित करें और संसार में कमलपत्र की भांति अस्पृष्ट और निर्मल रहें।

ईश्वर कर्ता है फिर भी अकर्ता है–

एक प्रश्न उठ़ सकता है कि यदि हम अपने सभी कर्म ईश्वर को अर्पित करते हैं, तो क्या ईश्वर उन सब का भार नहीं उठाएगा? क्या वह एक कचरे का पात्र नहीं बन जाएगा? इस संदर्भ में हमारे शास्त्र समुद्रमंथन की कथा बताते है। जब समुद्रमंथन में विष निकला, तब भगवान शिव ने उसे पी लिया। परंतु वे उससे प्रभावित नहीं हुए। इसी प्रकार भगवद्–गीता के अनुसार ईश्वर भक्तों के पाप–पुण्य से अछूता रहता है। यही उनकी विद्वत्ता है।

ईश्वर कर्म करता हुआ भी अकर्ता रहता है। वह हर कर्म में अकर्म देखता है अर्थात् सभी परिवर्तनों के पीछे स्थित शाश्वत सत्य को देखता है।

मुक्ति ईश्वर से एकत्व है–

ऐसे ईश्वर को देखना ही सच्ची भक्ति है। और उसी ईश्वर को अपनी आत्मा की तरह जान लेना ही मुक्ति है। कर्तापन का अहंकार अज्ञान के कारण होता है। वास्तव में सभी कर्म ईश्वर की त्रिगुणात्मक प्रकृति द्वारा ही सम्पन्न होते है। 'गुणाः गुणेषु वर्तन्ते' तीनों गुण एक–दूसरे में अनुवर्तन कर रहे है और जीवन की विविध परिस्थितियां उत्पन्न हो रही है। इसे जानकर ज्ञानी व्यक्ति उनसे अछूता रहता है।

ॐ तत् सत्

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

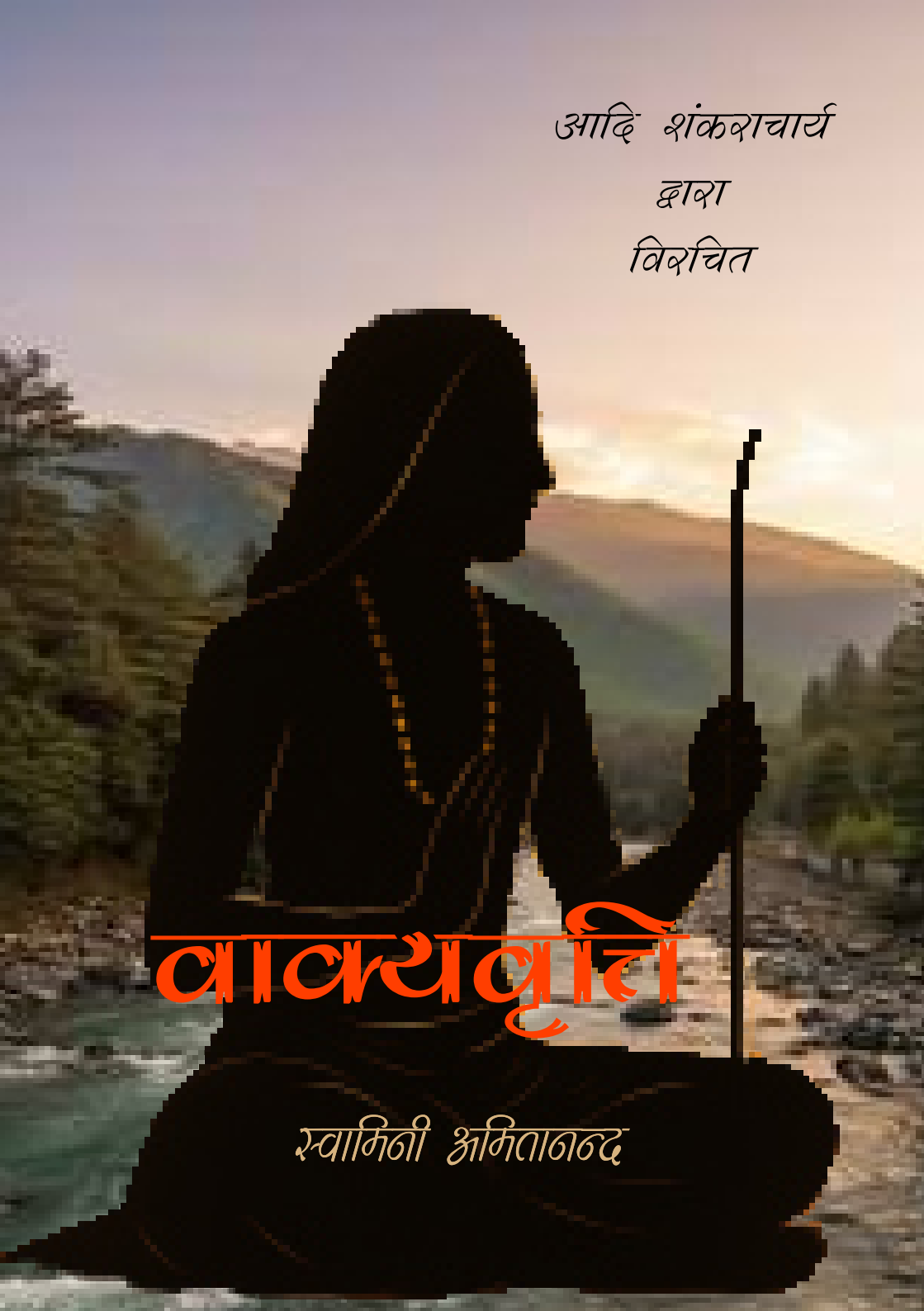

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

श्लोक – 33

यदानन्त्य प्रतिज्ञाय श्रुतिस्तत्सिद्धये जगौ।
तत्कार्यत्वं प्रपंचस्य तद्ब्रह्मेत्यवधारय।।

श्रुति ने जिसकी अनन्त स्वरूपता को दिखाने की प्रतिज्ञा करके उसकी सिद्धि के लिए समस्त प्रपंच को जिसके कार्यरूप दिखाया है, वह ही ब्रह्म है – ऐसा निश्चय करों।

वाक्यवृत्ति - श्लोक : ३२

आचार्य ने पूर्वश्लोक में छान्दोग्य उपनिषद् का श्रुति प्रमाण देकर ब्रह्म की ज्ञानस्वरूपता दर्शाई। अब यहां आचार्य तैत्तिरीय उपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली की ऋचा का उद्धरण दे रहे हैं। जिसमें 'सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म' इस तरह ब्रह्म के लक्षण प्रदान किए हैं। इस श्रुति में ब्रह्म को अनन्त स्वरूप बताया गया है। अनन्त का अर्थ है, जो अन्तरहित, जिसमें किसी भी देश, काल, वस्तुत्व आदि रूप संकुचिता-सीमा नहीं है। अर्थात् न देश से सीमित है, न काल से और न वस्तुत्व से।

जब हम इस जगत को देखते है तथा अनुभव करते

हैं तो स्वाभाविक ही हमें सत्य प्रतीत होता है। इसका अभिप्राय है कि एक ब्रह्म है और दूसरा जगत है। यदि ब्रह्म और जगत यह दो वस्तुएं है, पहला प्रश्न तो यह होता है कि सत्य तो एक ही होता है, दो सत्य कैसे हो सकते है? तथा दो वस्तु होनेसे ब्रह्म की अनन्तस्वरूपता कैसे सम्भव हो सकती है? एक वस्तु दूसरी वस्तु को सीमित करता है। जहां ब्रह्म है, वहां जगत नहीं है और जहां जगत है, वहां ब्रह्म नहीं है। इस प्रकार दोनों ही अन्योन्य सीमित कर देती है।

इसी शंका का समाधान वहीं पर आगे श्रुति ने ब्रह्म का कारणत्व बताकर किया है। श्रुति बताती है कि, 'तस्माद्वा एतस्माद् आत्मनः आकाशः सम्भूतः....' इसी ब्रह्म से क्रमशः आकाश आदि महाभूत की उत्पत्ति हुई तथा उसीसे समस्त जड़-चेतन जगत का विस्तार हुआ है। यह इसी प्रकार है कि

जैसे माटीरूपी कारण से घड़ा आदि माटी के कार्यरूप समस्त संसार निर्मित हुआ है। माटी घड़े का कारण होने से उसे घड़े से पृथक् नहीं की जा सकती है अर्थात् माटी और घड़ा इस प्रकार के किसी द्वैत की आशंका करके माटी को घड़े से सीमित नहीं मानना चाहिए। क्योंकि जहां घड़ा है, वहां माटी है। इसी प्रकार श्रुति ने ब्रह्म को समस्त प्रपंच अर्थात् पंचमहाभूत तथा उससे निर्मित जगत का कारण बताया है। यह कारण भी रस्सी में सांप की कल्पना की तरह अर्थात् विवर्त कारण है। जहां मूल अधिष्ठान में किसी भी प्रकार का विकार या परिवर्तन के बगैर ही सांप भासित होता है। ब्रह्म की प्रपंच की तरह से प्रतीति भी उनकी मायाशक्ति से ही हो रही है। ब्रह्म से पृथक् किसी जगत का अस्तित्व नहीं है, जो उसे सीमित कर सके। अतः श्रुति ने जगत के कारणभूत ब्रह्म को अनन्त स्वरूप बताया है।

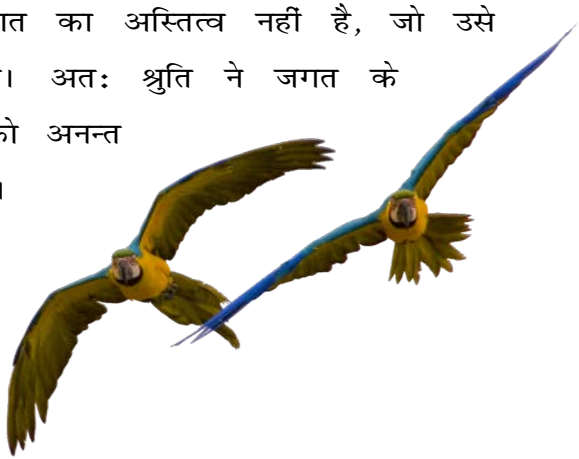

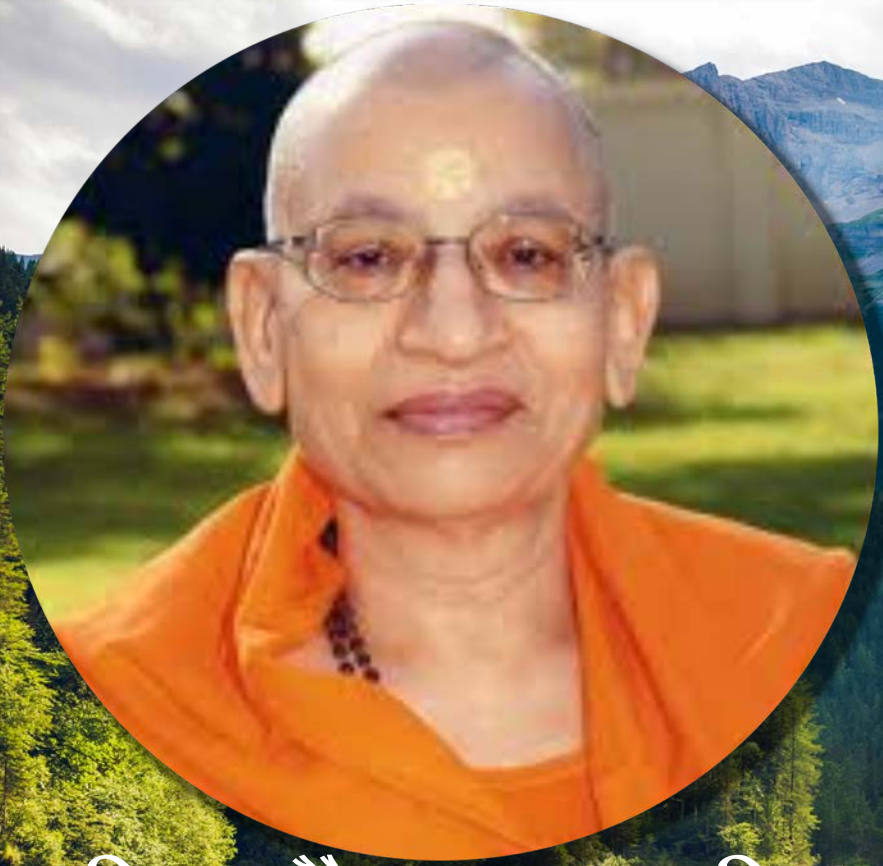

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

- ३७ -

नैतिकता

३७ – नैतिकता

स्वतंत्ररूप से कर्म करने की इच्छा और शक्ति मात्र मनुष्य के पास ही है। अन्य किसी प्राणी के पास नहीं। अन्य प्राणी संकल्पपूर्वक कर्म नहीं कर सकते है, मात्र स्वभाव से ही प्रेरित होकर करते हैं। इसलिए यह कर्म करना, नहीं करना या अन्यथा तरीके से करना – ऐसी स्वतंत्रता उनके पास नहीं है। चूहे को देखकर उस पर झपटा मारना बिल्ली का स्वभाव

है। जब कि अपने समक्ष लड्डु रखा हो तो झपटा मारना, या न मारना उस विषयक स्वतंत्रता अपने पास है। इस स्वतंत्रता का मनुष्य को उचित प्रयोग करना चाहिए।

अब प्रश्न यह होंता है कि जीवन में अपनी स्वतंत्रता कितनी है? इस जगत की रचना हमने नहीं की है, इसके अलावा परिस्थितियों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। लोग कहते हैं कि, 'स्वामीजी! कई बार हमें सही/उचित करना हो तो भी गलत करने पर मजबुर किया जाता है।' तो फिर हम जो करना चाहते है, उसे करने की हमें स्वतंत्रता है?

बात सही है कि हमारी स्वतंत्रता सीमित है,

किन्तु वह है तो सही। अमुक स्वतंत्रता हमें है कि कर्म करते समय कौनसे मूल्यों का पालन करे या किस प्रकार की भावना रखे। परिस्थिति पर हमारा नियंत्रण नहीं है, और फिर हमें जो जोब मिले उसे हमें लेनी पडती है और उपरि अधिकारी जैसा कहता है, वैसा करना पडे–इस प्रकार की परतंत्रता भले हो, तो भी इस परिस्थिति में हम इस प्रकार से कर्म तो कर सकते है कि जिससे मुझे जहां नौकरी मिली है, उस संस्थान को अधिक से अधिक लाभ हो सके, उनका जो प्रयोजन है, उसे सफल बनाने में अपना योगदान दे सकें, इसमें फिर अपना व्यक्तिगत लाभ कितना, हमें प्रमोशन मिलेगा कि नहीं ऐसी स्वार्थदृष्टि बनाए

रखने की स्वतंत्रता भी हमें है, तन्ख्वाह मिलती है, इसलिए हम इमानदारी से कर्म करे, कामचोरी न करें – ये सब स्वतंत्रता तो हमें है ही। ऐसे अनेकों प्रश्न अवश्य होगे कि जीवन में व्यक्तिगत धरातल पर हमें बहुत कुछ सहना पड़ता होगा, किन्तु फिर भी इमानदार रहना, सेवाकी भावना से कर्म करना, इत्यादि स्वतंत्रता तो हमें है ही।

परिस्थिति प्रतिकुल होती है यह प्रारब्ध है। किन्तु तुम जो ऐसा मानते हो कि बेइमानी से ही मनुष्य सम्पन्न बनता है और इमानदार मनुष्य दीन ही रहता है तो ऐसा कोई नियम नहीं है। ऐसा नहीं है कि सब अनैतिक मनुष्य धनवान होते है और सब नैतिक मनुष्य गरीब, दीन होते है। कोई मनुष्य धनवान या सफल बना है

तो अनैतिकता के बल पर वैसा बना होगा ऐसा निर्णय करने का कोई ठोस कारण अपने पास नहीं है। कर्म की गति गहन है और सब नियमों का हमें ज्ञान नहीं है। अभी जो प्राप्त होता है, वह वर्तमान कर्म के कारण मिला है या भूतकाल के किसी कर्म के कारण मिला है, उसका निर्णय करना अत्यन्त कठिन है। कोई अनैतिक मनुष्य इस समय मानों के समृद्ध होता है तो उसका कारण यह हो सकता है कि भूतकाल में उसने कोई शुभ कार्य किए होंगे। उसका फल उसे अभी प्राप्त हो रहा है। और इस समय जो गलत कर्म कर रहा है, उसका फल भी भविष्य में उसे अवश्य भोगना पड़ेगा। वह दुष्कर्म कर रहा है और इसलिए वह सुखी है ऐसा कभी नहीं कहा जा सकता।

कर्म का एक सरल नियम है कि सत्कर्म का फल सुख और दुष्कर्म का फल दु:ख। यह भी श्रद्धा का विषय है। यद्यपि इस समय वातावरण ऐसा है कि अच्छे अच्छे लोगों की श्रद्धा डगमगा जाती है। क्योंकि न्याय नाम की कोई वस्तु मानों कि दीखती ही नहीं है! परन्तु न्याय तो होना ही चाहिए। वह नहीं हो तो यह सृष्टि टिक ही नहीं सकती। इसलिए हमें यदि जीवन में विकास करना है तो शुभ कार्य, सत्कर्म करना चाहिए, धर्म या मूल्यों के आधार से कर्म करना होगा। इसमें कोई अपवाद हो ही नहीं सकता। अर्थात् ईश्वर के न्याय में श्रद्धा होना महत्वपूर्ण आवश्यकता है। साथ ही जीवन में उत्कृष्ट ध्येय भी आवश्यक वस्तु है। तदुपरांत कसौटियोंका, मुसीबतों का सामना करना भी जरूरी है। तो ही हम श्रेयमार्ग का चयन कर सकेंगे और इस मार्ग पर दृढ़ता से प्रयाण कर सकेंगे।

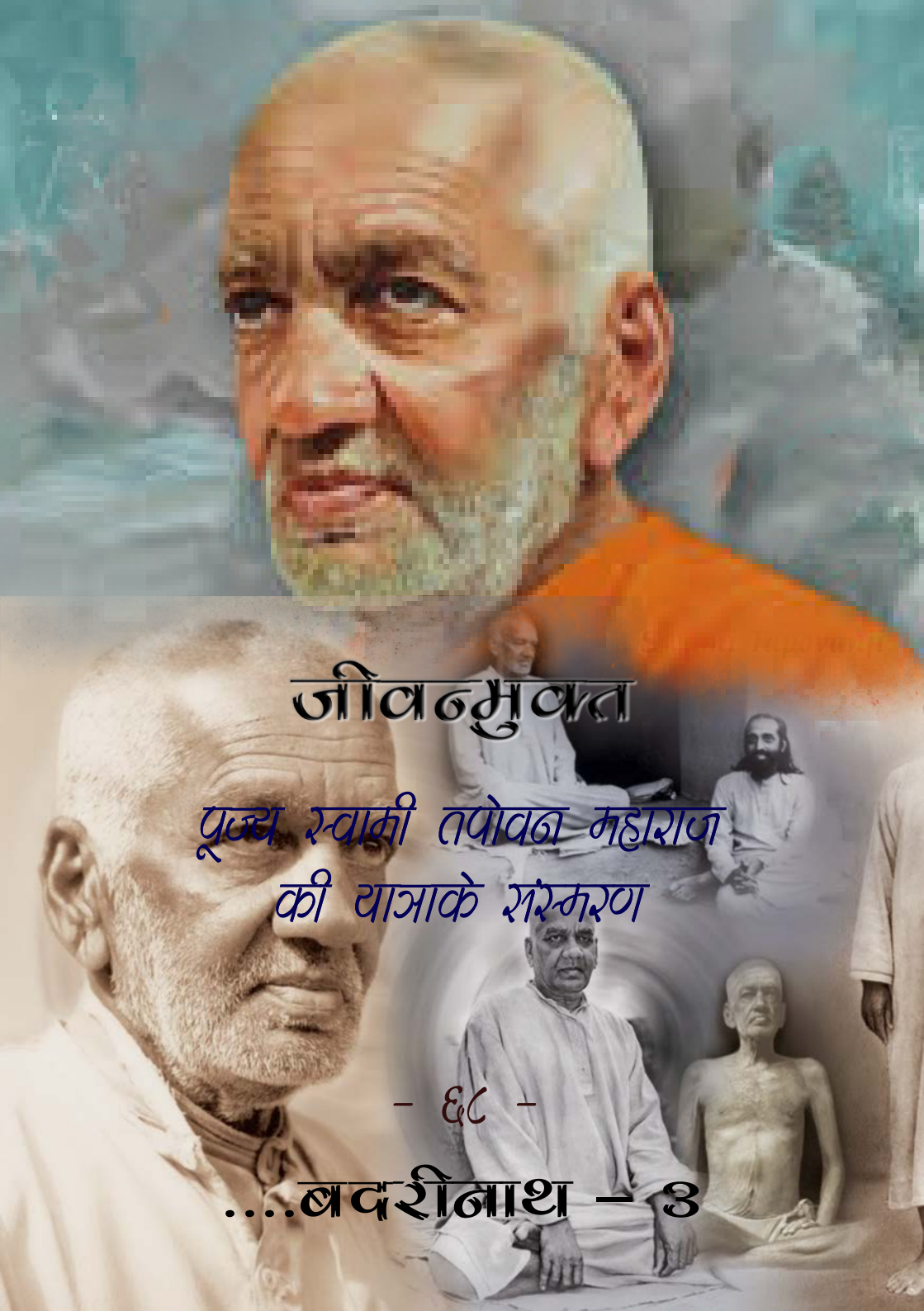

जीवन्मुक्त

पूज्य स्वामी तपोवन महाराज की यात्राके संस्मरण

- ६८ -

....बदरीनाथ – 3

बदरीनाथ – ३

मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि हिमगिरि पर ग्यारह हजार फुट की उँचाई पर स्थित केरल के इस कीर्ति स्तम्भ के विषय में केरलवासियों में से अधिकतर लोगोंको जानकारी है या नही? केरल वासियों! तुम अपनी मातृभूमि के प्रत्येक प्राचीन महापुरुष का प्रतिदिन स्मरण किया करो। मातृभूमि की

अनन्यदुर्लभ, अध्यात्म संपत्ति पर तुम अभिमान किया करो। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि इतनी अध्यात्म सम्पन्न भूमि पर हमारा जन्म हुआ है। आज केरलीय अवश्य ही अध्यात्म दरिद्र हो गये है। परमात्म भक्ति अथवा विचारोन्मुखता आज उनमें से ज्यादातर लोगों में नहीं दिखायी देती है। आत्मज्ञान से हीन मानव जीवन, मानव जीवन नहीं होता। आत्मज्ञान के बिना परम शांति और परमसुख प्राप्त नही होते। जबतक आत्मज्ञान नहीं होता तबतक सभी तृष्णा के पात्र बने रहते हैं तथा परमदरिद्र और परम दु:खी रहते हैं। अत: तुम आत्मज्ञान को प्राप्त करो। आत्मज्ञान के बिना आत्मबल तथा आत्मबल के बिना सर्वप्राणी की

सहज दुर्बलताओं का नाश संभव नहीं है। आत्मबल का शब्द यद्यपि आज हमारे चारों ओर मुखरित होता रहता हैं, तथापि लोग इस पर विचार नहीं करते कि वह आत्मबल कैसे पैदा होता है? आत्मबल आत्मज्ञान के बिना कभी संभव नहीं होता।

यदि कोई यह समझे कि आत्मज्ञान मेरे जैसे व्यक्ति में ही होता है जो संन्यास लेकर बदरिकाश्रम या और कही एकान्त निवास करता है तो यह सोचना ठीक नहीं है। आत्मविचार किसी भी आश्रमी में और किसी भी काम को करनेवालों में हो सकता है। केवल आत्मा को सत्य तथा सभी अनात्म पदार्थों को असत्य समझना ही आत्मज्ञान है। यह आत्मज्ञान कोई गृहस्थी, कोई ब्रह्मचारी, कोई कृषक

या कोई न्यायाधिपति कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। परिवार और पालन पोषण करते हुए भी आत्मज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी व्यवहार आत्मज्ञान के साथ ही करो! एक आत्मबली का कर्म अज्ञानी के कर्म की अपेक्षा कहीं अधिक तथा विश्वमंगल के लिए अत्यंत उपयोगी होगा। इसलिए तुम अपने-अपने घरों में बैठे हुए भी तथा अपने-अपने कर्मों को करते हुए भी अनात्मा से आत्मा की विवेचना कर एक अध्यात्म सम्पन्न, धीर एवं तृप्त जीवन को पा लो। हमारी केरल भूमि की पुरातन अध्यात्म कीर्ति का पुनरुद्धार करो। यह दृढ़ निश्चय से कहो कि मैं अच्छेद्य अदाह्य आत्मवस्तु हूँ, तथा मैं तज्जन्य हिरण्यगर्भ को भी तृणवत् करने वाले आत्मबल को पाकर लोकहित को ही लक्ष्य

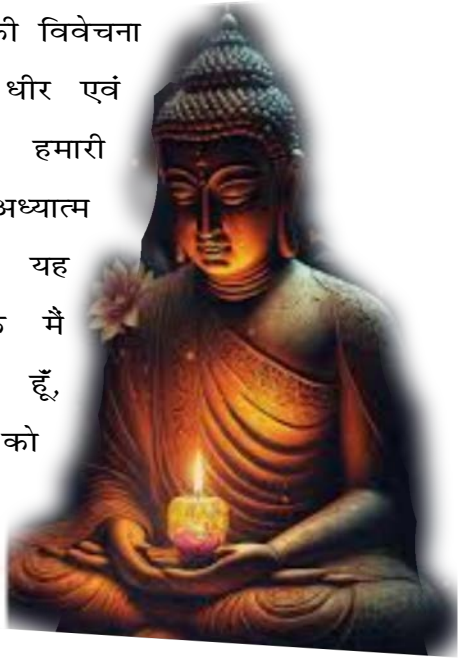

करके स्वकर्मों को निष्काम रूप से करता रहूँगा, तथा अपने जीवन को ऋषि जीवन बनाकर आनन्द प्राप्त करुँगा। इस समय बदरिकाश्रम में बैठे हुए मैं अपने केरलीय भाइयों को संक्षेप में यही परामर्श देता हूँ।

मुझे यहाँ लिखने का समय या सुविधा नहीं मिलती, फिर भी कोई एक शक्ति, अर्थात् अपनी मातृभूमि के प्रति मेरा अगाध प्रेम, मेरे अन्दर से कुछ न कुछ करने की प्रबल प्रेरणा मुझे दे रही हैं, इसीलिए इतना लिखने में समर्थ हो सका हूँ।

श्री रामचरितमानस पर आधारित

— ०७ —

कैकेयी चरित्र

कैकेयी चरित्र – ७

कैकेयी की अपने दो वरदानों की स्वीकृति की सारी योजना से अपरिचित महाराजश्री कैकेयी के वाक्यजाल में पूरी तरह फंस जाते हैं। बड़े ही उत्साह–भरे स्वर में वे सत्य और रघुवंश की महिमा का गायन करने लग जाते हैं। उन्हें अपनी उदारता पर गर्व था और इसी उत्साह में वे यह कह बैठते हैं कि वे दो के बदले में चार वरदान ले सकती हैं।

यह एक विचित्र विडम्बना थी। महारानी कैकेयी के हृदयनिषंग में चातुरी के अनेक बाण विद्यमान थे, पर उनमें सबसे विषैले बाण वे थे–जिन्हें कैकेयी ने दशरथ के शब्दों में आवेष्टित कर लिया था। उनका औदार्य और उनकी सत्यवादिता ही उनके लिए सर्वाधिक घातक बन बैठी। असत्य जब सत्य का कवच धारण कर लेता है तब वह कितना भयावह बन बैठता है, यह प्रसंग इसका उत्कृष्ट दृष्टान्त है। अपने ही वाक्य के कारागार और बन्दी महाराज दशरथ की निरुपायता और पीड़ा का हेतु बन गई।

ग्रीष्म ताप से संतप्त वृक्ष बड़ी आतुरता से मेघ के शुभागमन की बाट जोहता है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेघ शीतल जल की वर्षा के स्थान पर यदि वृक्ष पर तड़ित का

प्रहार कर दे तो उस समय वृक्ष की जैसी दशा होगी, महाराजश्री की स्थिति ठीक उसी प्रकार की थी। नवीन गृह निर्माण के लिए पुरातन को उजाड़ना ही पड़ता है। महाराजश्री युवराज पद के माध्यम से रामराज्य की आधारशिला रखना चाहते थे। उन्हें इसमें महारानी कैकेयी के सहयोग पर पूर्ण विश्वास था। पर कैकेयी ने इस योजना को ध्वंस करके अपनी दृष्टि में भरत-राज्य का शिलान्यास करने की चेष्टा की। अभागी रानी को स्वयं ही यह पता नहीं था कि नींव भरत-राज्य की नहीं, अपितु विपत्ति भवन की पड़ रही थी।

महाराजश्री कैकेयी के अप्रत्याशित व्यवहार से सर्वथा किंकर्तव्य विमूढ़ स्थिति में पहुंच गए। उन्होने गिड़गिड़ाते हुए कैकेयी

के चरणों पर सिर रख दिया। उन्हें भरत के राज्य अभिषेक में आपत्ति न थी। किन्तु राम के वनगमन की कल्पना भी उनके लिए असह्य थी। महाराज की सारी मनुहार व्यर्थ गई। कैकेयी पर इसकी उल्टी प्रतिक्रिया हुई। उनका आक्रोश सीमा लांघ जाता है। उन्होंने राम के वनगमन को ही अपनी प्रतिष्ठा का मुख्य प्रश्न बना लिया था।

कथा प्रसंग

सुदामा की निष्काम भक्ति

सुदामा की निष्काम भक्ति

यह प्रसिद्ध है कि श्री कृष्ण और सुदामा परं मित्र थे। जिसमें श्रीकृष्ण तो द्वारिकाधीश हुए किन्तु सुदामा अत्यन्त दरिद्र ब्राह्मण रह गएं। सुदामा की दरिद्रता के पीछे उनकी निष्काम भक्ति व अपने मित्र श्रीकृष्ण के प्रति परं स्नेह और निष्ठा ही मात्र कारण था।

यह उस समय की बात है कि जब श्रीकृष्ण और सुदामा सांदीपनी ऋषि के आश्रम में पढ़ते थे। एक

बार गुरु सांदीपनी भिक्षा मांगने के लिए गए हुए थे। उसी समय महर्षि भृगु ने आकर गुरुपत्नी से भिक्षा मांगी। गुरुपत्नी ने देखा कि घर में दो मुठी चना ही बचे हुए है। अभी ऋषि सांदीपनी भी भिक्षा लेकर लौटे नहीं है, यदि इस चने को मैने महर्षि को भिक्षा में दे दिएं तो बच्चों को वन में भेजते समय उसे क्या देंगे! यह सोचकर ऋषिपत्नी ने महर्षि भृगु से कह दिया कि अभी घर मे कुछ भी देने योग्य है नहीं। आप कुछ समय पश्चात् आइएं, तब तक ऋषि भी भिक्षा लेकर पधार जाएंगे।

किन्तु महर्षि ने अपनी दिव्य दृष्टि से देख लिया कि घर में चने होते हुए भी ऋषिपत्नी ने देने से इन्कार कर दिया और साथ ही असत्य भाषण भी किया है। यह देखकर महर्षि अत्यन्त क्रोधित हुए और उन्होंने श्राप दे दिया कि ये चने जो भी खाएगा, वह जीवन

में दरिद्रता का दुःख झेलेगा।

यह बात सुदामा ने सुन ली, उन्होंने सोचा कि यदि कृष्ण ने चने खाये तो उनको भी दरिद्रता झेलनी पडेगी। इसलिए जब ऋषिपत्नी ने चने लेकर दोनों को जंगल में लकड़ी काटने भेजा तो सुदामा चुपचाप चोरी से सब चने खा गएं। और इस प्रकार श्रीकृष्ण के प्रति अपनी भक्ति व निष्ठा का परिचय दिया।

श्रीकृष्ण द्वारकाधीश हुएं, यह जानते हुए भी सुदामा कभी भी उनसे दरिद्रता से मुक्ति की याचना करने नहीं गएं। अपनी पत्नी के आग्रह पर वे संकोच में उनके पास चले गएं। किन्तु कुछ भी मांगा नहीं। तब भगवान श्रीकृष्ण ने उनके द्वारा भेंट में लाए हुए तंदुल के बदले में प्रचूर मात्रा में सुख, वैभवादि प्रदान करके धनधान्य कर दिया।

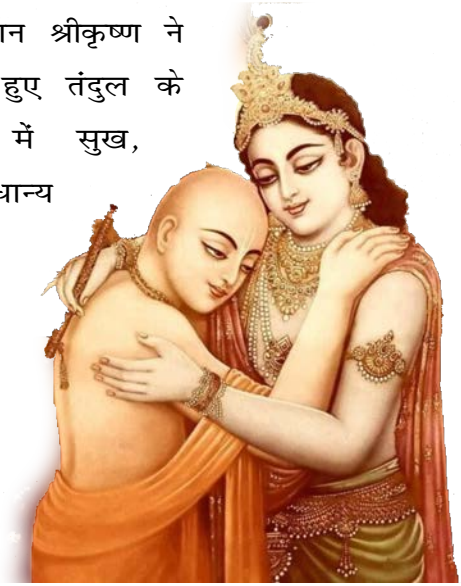

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

Activities

Online Class - Upadesh Saar

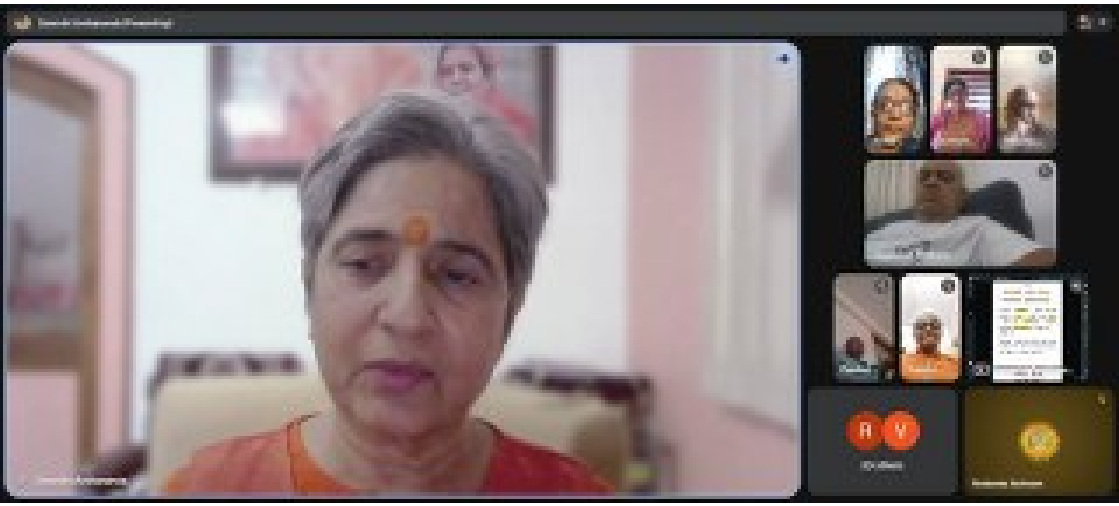

Online Class - Gita

Samapan of Online Class with Puja

Sri Gangeshwar Mahadev Abhisheka

Blessings on conclusion of Gita Ch 7 Class

Activities

up

Activities

Om Sri Gurubhyo Namah

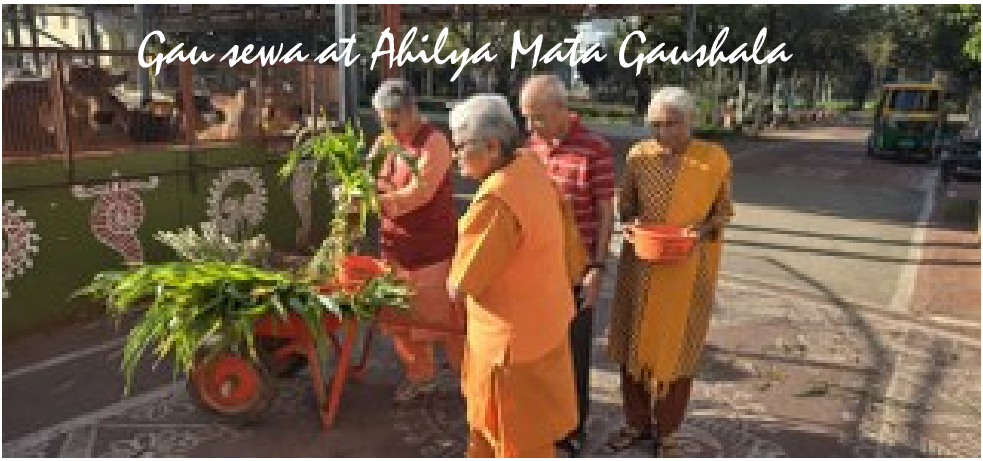
Gau sewa at Ahilya Mata Gaushala

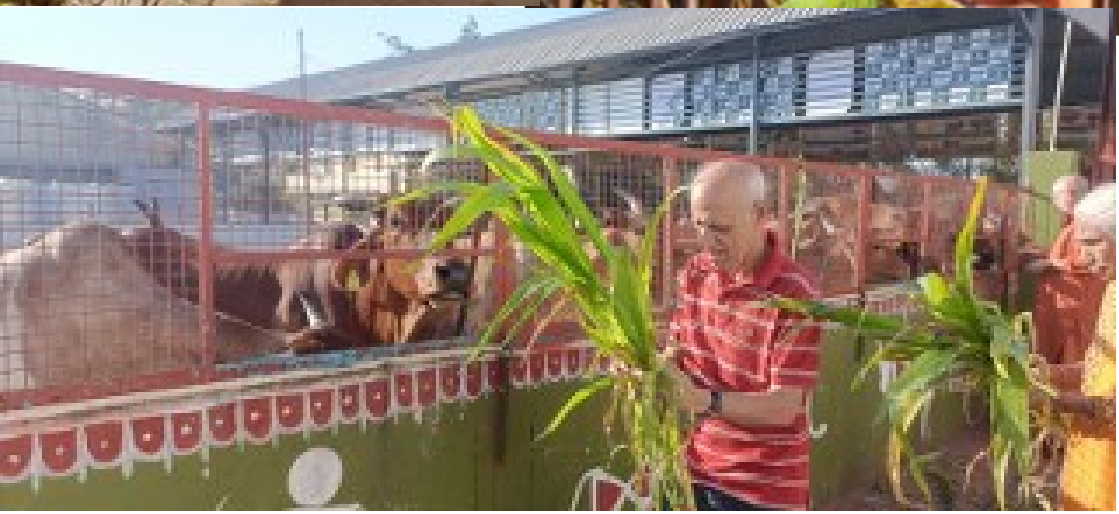

Activities

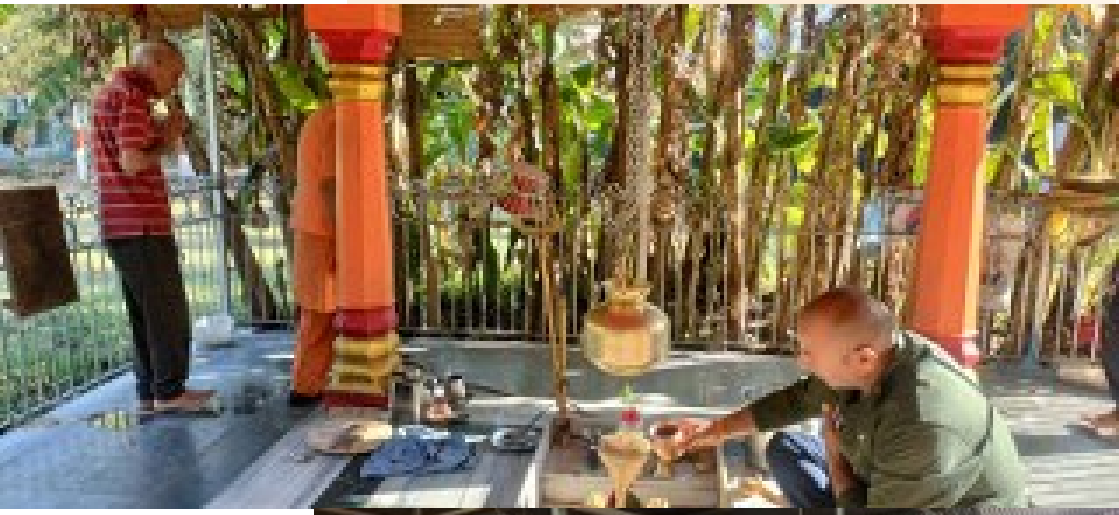

Abhisheka by Sachdev's

up

Visit Ashram

Sachdev's from Mumbai

Karaoke

Ashram Birds

Programs

Poojya Guruji Swami Atmanandaji

conducts

Daily Classes on

Bhagwad Geeta

with Shanker Bhashya on

Chapter 5 (Karma Sanyas Yoga)

@ Vedanta Ashram, Indore

VEDANTA CAMP ON

GURU POORNIMA

by Poojya Guruji Swami Atmanandaji

From 26th to 28th July

On Pratah Smaran Stotram

@ Vedanta Ashram, Indore

Programs

VEDANTA CAMP

by P. Swamini Amitanandaji

From 12th to 16th July

On STHITAPRAGYA

Gita Ch. 2

Raman Adhyatmik Sewa Kendra,

Kheda Dist, Gujrat (In Gujrati)

VEDANTA CAMP

by Poojya Guruji & Ashram Mahatmas

From 30th Aug to 4th Sep

On Gita 8th Chapter

@ Vedanta Ashram, Indore

Click here for more details

Registration Form

Programs

Online Vedanta Class

On Upadesh Saar (Ramana Maharshi)

By P. Swamini Amitanandaji

Every Saturday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Online Gita Pravachans

Gita 6

By P. Swamini Samatanandaji

Every Sunday (4.00-5.00 PM)

on Google Meet

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHADS / PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Piyush - Mar '26 / Vedanta Sandesh - Apr '26

Visit us online :

Vedanta Mission

Check out earlier issues of :

Vedanta Piyush

Join us on Facebook :

Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel

Vedanta Ashram Channel

Published by:

Vedanta Ashram, Indore